रचनात्मकता, रचना और हम लोग

साहित्यिक लेखों का संग्रह

असग़र वजाहत

रचनात्मकता, रचना और हम लोग

असग़र वजाहत

अनुक्रम

गुरुदेव, अलीगढ़ और मैं	4
सात आसमान : सातवां पक्ष	25
'फ़ैज़' पर कुछ अलग ढंग से	32
'मजाज़' : हम पी भी गए, छलका भी गए	38
जब इंतिज़ार हुसैन अपनी जन्मभूमि आए	45
आसमान पर लिखा नाम-कुर्रतुलऐन हैदर	66
हाय! फिर रह गया आग़ोशे बियाबां ख़ाली	76
शैलेन्द्र : सबसे अलग और अनोखा गीतकार	80
नेमिचंद्र जैन : सुनने वाले तो बहुत हैं	91
नई बस्ती के वासी: अरुण प्रकाश	96
ब्रजेश्वर मदान : जीवन की विचित्रता का एक चेहरा	101
शहरयार : शायर एवार्ड से बड़ा होता है	110
प्रमोद जोशी : मुख्यधारा का तैराक	121
बेगम अख़्तर : आवाज़ का शोला	134

कारण तो राजेन्द्र जी भी नहीं जानते 137

‘हमने इस इश्क में क्या सीखा है क्या पाया है’ 146

लघु पत्रिकाएं और नया संसार 151

समय रचनाकार और समाज 155

रचनात्मकता, रचना और हम लोग 161

ज़रूरी है उपन्यास लिखना 167

कहानी के बारे में 173

गुरुदेव, अलीगढ़ और मैं

1962 में उत्तर प्रदेश के एक छोटे से शहर फतेहपुर से हाई स्कूल का इम्तिहान धुप्पल में पास कर लेने के बाद मैं अपने छोटे भाई के साथ अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी आ गया था। छोटे शहर और पाबंदियों में जकड़े माहौल से निकलकर जो घबराहट और दिक्क़तें होनी चाहिए, वे सब थीं। पहले साल तो 'न्यूकमर' था। इंट्रोडक्शन और खिंचाई वगैरह का सिलसिला भी चलता था। हर सीनियर को सलाम करना ज़रूरी था। यूनिवर्सिटी के अदब-कायदे सीखने थे। इसलिए डरा-डरा और सहमा-सहमा रहता था। क्लास में जो पढ़ाया जाता था उसका माध्यम अंग्रेज़ी था और यू. पी. बोर्ड में अंग्रेज़ी की पढ़ाई वाजबी-वाजबी ही होती थी। इसलिए क्लास में कुछ समझ तो आता था और बहुत कुछ ऊपर से निकल जाता था।

उस ज़माने में हाई स्कूल पास करके आए लड़कों के लिए प्री-यूनिवर्सिटी नाम की क्लास हुआ करती थी और उसके बाद तीन साल का ग्रेजुएशन का कोर्स था। युगीन फैशन के अनुसार यह तय कर दिया गया था कि मुझे डॉक्टर बनना है इसलिए फिजिक्स, कैमिस्ट्री और बायोलॉजी विषय दिलाए गए थे ताकि एम. बी. बी. एस. में दाखिला मिल सके। पहले साल का नतीजा जो निकला तो पता चला तीन पैरों पर खड़ा हूं। डॉक्टर बनने का सपना टूट चुका था। फिर पता नहीं क्यों तय कर लिया कि

मुझे थियोलॉजी पढ़ना चाहिए। बी. एस-सी. में दाखिला ले लिया। बॉटनी, प्रैक्टिकल की क्लास में किसी लड़के ने मुझसे पूछा कि मैं शिया 'थियोलॉजी' की क्लास में जाता हूं? विश्वविद्यालय में मुसलमान लड़कों की धार्मिक शिक्षा दो हिस्सों में बंटी थी। शिया लड़कों क। शिया थियोलॉजी और सुन्नी लड़कों के लिए सुन्नी थियोलॉजी पढ़ाई जाती थी। मैं शिया परिवार में जन्म लेने की वजह से शिया थियोलॉजी पढ़ता था। जो लड़का मुझसे यह पूछ रहा था कि क्या तुम शिया थियोलॉजी की क्लास में जाते हो वह शिया था और मेरे साथ क्लास जाना चाहता था क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि शिया थियोलॉजी की क्लास कहां होती है।

हम दोनों साथ-साथ क्लास में गए थे और उस लड़के से मेरी दोस्ती हो गई थी। उसका नाम मुज़फ़्फर अली था और वह लखनऊ से आया था। वह भी मेरी तरह पढ़ने में कमज़ोर था। वह भी यूनिवर्सिटी की हॉबीज़ वर्कशॉप में पेंटिंग सीखना चाहता था। हम दोनों के साथ एक तीसरा लड़का भी देर-सवेर शामिल हो गया था। इसका नाम शकील अहमद अय्यूबी था। वह शिया नहीं था। लेकिन दीगर बातों में हमारे जैसा था। हम तीनों साथ-साथ क्लास गोल करने, मटरगश्ती करने, पेंटिंग सीखने में डूबते चले गए।

उन दिनों का अलीगढ़ 1947 के सदमे से निकल चुका था। यूनिवर्सिटी अपने शबाब पर थी। भारत सरकार खुलकर मदद कर रही थी। कांग्रेस पार्टी जिसका शासन

था, मुसलमानों पर मेहरबान थी क्योंकि मुसलमान वोट कांग्रेस को ही जा रहा था। जवाहरलाल नेहरू जैसा उदार और धार्मिक सद्भाव पर यकीन करने वाला प्रधानमंत्री था। इसका असर अलीगढ़ के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर पड़ रहा था और अलीगढ़ एक बार फिर उर्दू लेखकों, कवियों और बुद्धिजीवियों का गढ़ बन गया था। सीनियर शायरों और अदीबों में मज़ाज के साथी और 'मौत' जैसी कविता के कवि मोइनुल हसन 'जज़्बी', प्रसिद्ध आलोचक आले अहमद 'सुरूर', मजनू गोरखपुरी और बेपनाह लोकप्रिय कवि जो अपने 'कत्ओं' के लिए जाने जाते हैं, अख़्तर अंसारी जैसे लोग थे। अख़्तर अंसारी के क़ते तकिया-ग़िलाफ़ों पर काढ़े जाते थे। चाबी के गुच्छों में लगे पीतल के टुकड़ों पर उकेर जाते थे। मतलब यह कि उनकी कविता भावुकता की सीढ़ियां चढ़कर आसमान तक जा पहुंची थी। उनका एक मशहूर क़त्आ है-

मैंने हसरत से कहा, तुमसे मुहब्बत है मुझे

उसने शरमाते हुए इसका जवाब मुझको दिया-

आह! कमबख्त दिले-नाशाद ये ग़ारत हो जाए

इस कदर ज़ोर से धड़का के मैं कुछ सुन न सका

इन शायरों के अलावा स्थापित और वरिष्ठ कवियों में मुजीबुर्रहमान थे। मुजीब